युवा संयमी डॉ० साध्वी श्री स्मृति जी म० साधाना उद्यान की वह पुष्पित कली रही हैं, जिसे उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकान्ता जी म० के ज्ञान उपवन में शासन ज्योति श्री सुधा जी म० ने सींचा है।

सतत् स्वाध्यायशीला स्मृति जी म० का जन्म 17 मई, 1969 को अम्बाला शहर, कांशी नगरी में हुआ। पिता श्री तरसेम कुमार जैन एवं माता श्री मति शशीकान्ता जी के सुसंस्कारों से संस्कारित तथा शासन ज्योति श्री सुधा जी म० घोर तपस्विनी श्री कमलेश जी म० की बलवती प्रेरणा प्राप्त कर सांसारिकता से हटकर इनका मन आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने लगा। वैराग्यकाल में ही आपने एम०ए० (हिन्दी) परीक्षा प्रथम श्रेणी मे समुत्तीर्ण की। तत्पश्चात् 19 नवरी 1991 को उत्तर भारतीय पर्वत्तक श्री पद्मचन्द जी म० ने आपको जैन भागवती दीक्षा मंत्र प्रदान किया। एम०ए० (संस्कृत) में आपने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया पुनः श्री उपासकदशाङ्गसूत्र पर शोध कार्य किया।

डॉ० श्री स्मृति जी म० सरल, मृदुल एवं स्नेहिल व्यक्तित्व की धनी विदुषी साध्वी रत्ना हैं। आप में विनयशीलता, सेवा भावना, भद्रता, जप-तप तथा लेखन कार्य का गुण कूट-कूट कर भरा हुआ है। इसका प्रमाण निरयावलिका सूत्र का सम्पादन, महाश्रमणी अभिनन्दन ग्रन्थ एवं महावीर जीवन चरित्र का सम्पादन है। आगम-अनुराग, आत्म विश्वास एवं दृढ़ श्रद्धा-यह आपकी नैसर्गिक विशेषताएं हैं। यह विशेषताएं ही आपको विकास के उच्चतम शिखर तक प्रतिष्ठित करेंगी। आप जिन शासन की, श्रमणी संस्कृति की गौरव बनें, यही मेरी मंगल भावना है।

साध्वी किरण

New BBC

न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन

5824, शिव मंदिर के पास, न्यू चन्द्रावल,
जवाहर नगर, दिल्ली - 110007
दूरभाष : 91-11-23851294, 55195809
ई मेल : newbbc@indiatimes.com

उपासकदशाङ्ग

साध्वी डॉ० स्मृति

New BBC

उपासकदशाङ्ग

(आगम युग का श्रावकाचार)

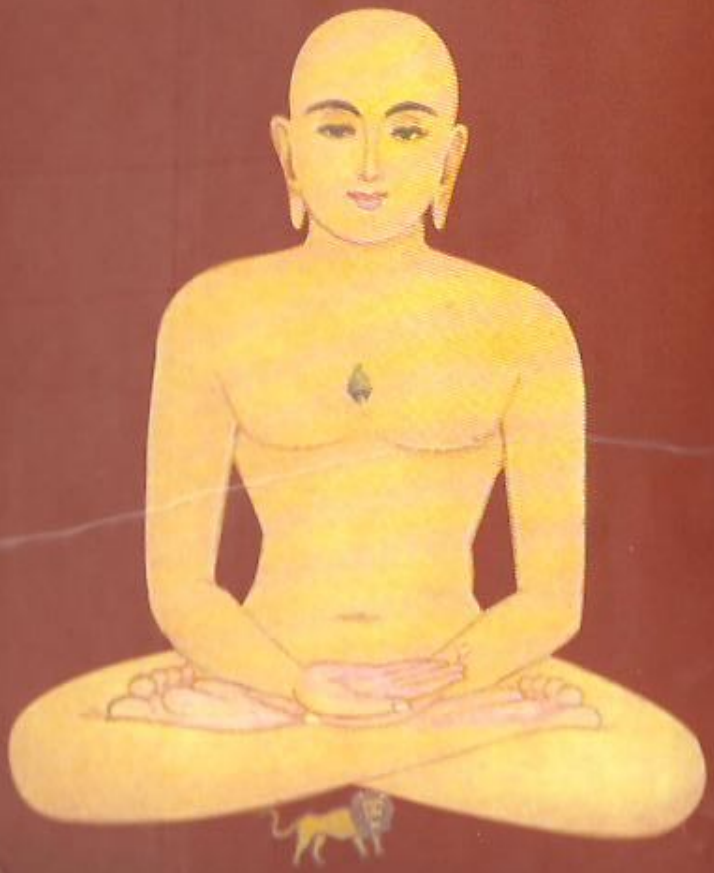

साध्वी डॉ० स्मृति

उपासकदशाङ्ग

(आगम युग का श्रावकाचार)

साध्वी डॉ० स्मृति

उपासकदशाङ्ग

साध्वी डॉ० स्मृति

New
BBC

उपासकदशाङ्ग

(आगम युग का श्रावकाचार)

उपासकदशाङ्ग

(आगम युग का श्रावकाचार)

लेखिका

साध्वी डॉ० स्मृति जी म०

New BBC

न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन

दिल्ली : : (भारत)

प्रकाशक :
एस. आदिनाथ जैन इन्टरनेशनल ट्रस्ट
एवं
न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन
5824, न्यू चन्द्रावल, (निकट शिव मन्दिर)
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
फोन : 23851294, 55195809
E-mail : newbbc@indiatimes.com

प्रथम संस्करण : 2005

मूल्य : 550.00

ISBN : 81-8315-010-1

सम्पर्क सूत्र :
श्री रवीन्द्र जैन, मंत्री
26वीं महावीर जन्म कल्याणक शताब्दी संयोजिका समीति (पंजाब)
पुराना बस स्टैन्ड, महावीर स्ट्रीट, मलेरकोटला-148023

लेज़र टाईप सैटिंग :
क्रियेटिव ग्राफिक्स
दिल्ली

मुद्रक :
जैन अमर प्रिटिंग प्रैस
दिल्ली-7

निर्देशक का प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि साध्वी डॉ० स्मृति जी म० ने मेरे निर्देशन में 'उपासकदशांगसूत्र : एक समीक्षात्मक अध्ययन' शीर्षक से अपना शोध कार्य सम्पन्न किया है। इनका यह कार्य मौलिक है। इन्होंने शोध से सम्बन्धित अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति की है। ये अपनी षाण्मासिकी प्रतिवेदनिकी को समय-समय पर विश्वविद्यालय में प्रेषित करती रही हैं। मैं। उक्त शोध प्रबन्ध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

डॉ० धर्मचन्द जैन

समर्पण

जिनकी छत्रछाया मेरे लिए कल्पवृक्ष है,
जिनका संस्पर्श मेरे लिए पारस सदृश है,
जिनका सान्निध्य मेरे लिए चिन्तामणि रत्न है
उन प्रेरणा प्रदात्री
जीवन निर्मात्री
गुरूणी मैय्या, जैन ज्योति, संथारा साधिका,
उपप्रवर्तिनी **श्री स्वर्ण कान्ता जी** म० की सुशिष्या
शासन ज्योति, सरलमना, गुरुनी **श्री सुधा जी** म०
के पावन चरण सरोजों में

स विनय
श्रद्धा
भक्ति

साध्वी स्मृति

उपप्रवर्तिनी, संथारा साधिका श्री स्वर्ण कान्ता जी म० सा०

जिन शासन श्रृंगार श्री राजकुमारी जी म० सा०

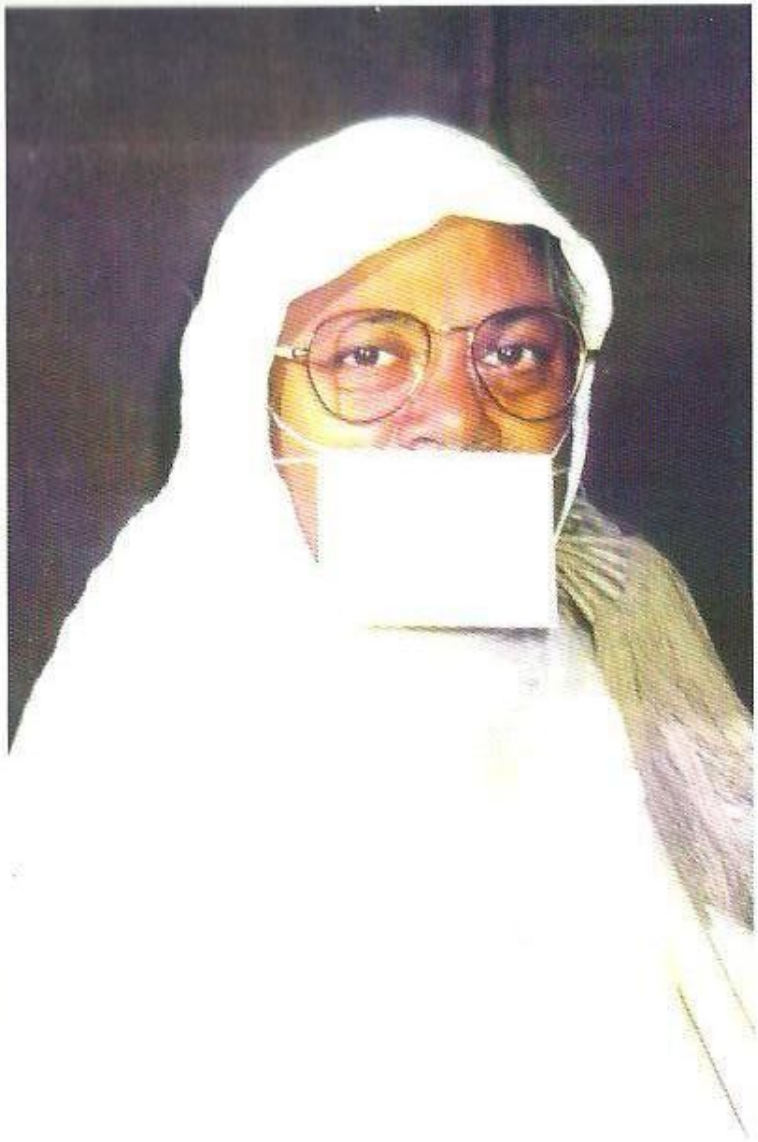

शासन ज्योति श्री सुधा जी म० सा०

दो शब्द

डॉ० साध्वी स्मृति द्वारा लिखित "उपासकदशाङ्गसूत्र" शीर्षक पुस्तक का मैंने सम्यगवलोकन किया। सम्पूर्ण जैन इतिहास में सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन सम्यक चारित्र एवं तप पर ही बल दिया गया है। इस सम्यक ज्ञान, दर्शनचारित्र एवं तप को आप किस प्रकार आत्मसात करते हैं यह जैन तथा जेनेतर ग्रन्थों में बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रतिपादित किया गया है। उपसाकदशाङ्गसूत्र में श्रावकाचार के बारे में बताया गया है कि भगवान आदिनाथ से महावीर स्वामी तक तीर्थंकरों में जो तीर्थरूपी श्रमण-श्रमणी-श्रावक-श्राविकाओं रूपी तीर्थ को प्रतिरूपित किया गया है उसमें श्रावक श्राविकाओं द्वारा जो आचार-विचार होना चाहिए उसके बारे में डॉ० साध्वी स्मृति जी ने अपनी पुस्तक में अत्यन्त सरल-सुबोध शैली में वर्णन किया है। इस पुस्तक में ग्रन्थकर्मी ने अत्यन्त ही सुन्दर एवं सरल ढंग में श्रावकाचार का अवलोकन किया है। पाठक जरुरी नहीं चिन्तक एवं विचारक ही हो, वह एक सामान्य पाठक भी हो सकता है इस पुस्तक को पढ़कर अपनी आत्मा का उद्धार कर सकता है और मोक्ष के मार्ग में अपने कदम बढ़ा सकता है। इस कारण से यह ग्रन्थ सुतराम अभिनन्दनीय है। इसमें साध्वी स्मृति जी के व्यापक एवं गहन अध्ययन का पता चलता है उनकी दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म है सारे विषय को हृदयङ्गम कर उन्होंने इसका प्रणयन किया है इस प्रणयन से वे सारे संसार के आत्मोन्नति के इच्छुक समुदाय के साधुवाद की पात्र है।

25-12-2004

सत्यव्रत शास्त्री
मानद् आचार्य
विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
पूर्व कुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय,
पुरी, उड़ीसा

शुभाशंसा

उपासना करने वाला उपासक अपने इष्टदेव-गुरु का भक्त, अनन्य सेवक तथा वैय्यावृत्ती आराधक होता है। स्वदार-संतोषी, मितोपभोगी, दृढ़संकल्पी, सदाचारी, अहिंसक एवं आत्म-संयमी साधक सद्गृहस्थ के लिए जैनदर्शन में व्रती, देशविरती, सागार, श्रावक एवं उपासक शब्द अधिक प्रयुक्त हुए हैं।

सम्यक्त्व सम्पन्न जो मानव प्रतिदिन अपने पूज्य गुरु, साधु-सन्तों, उपाध्याय-मुनियों एवं आचार्यों के निकट बैठकर उपयोगी कल्याणकर सद्धर्म को सुनता है और अपने जीवन में उसका अंशत: आचरण करता है वही सुश्रावक एवं उत्तम सद्गृहस्थ है। इन्हीं सद्गृहस्थों में से कतिपय मानव वैराग्य से ओतप्रोत होकर संन्यास धारण कर श्रमण-श्रमणी बनते हैं। सम्भवत: इसी कारण गृहस्थ को श्रेष्ठ कहा गया है-गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठ:।

जिस प्रकार वायु के द्वारा समस्त प्राणीजगत् जीवन्त रहता है उसी प्रकार गृहस्थ को ही आश्रम करके शेष (तीनों) आश्रम उत्पन्न होते हैं-

यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तव:। तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व-आश्रमा: (मनुस्मृति) और भी जैसे सभी प्राणी माता के सहारे ही जीते हैं वैसे ही गृहस्थ का आश्रय लेकर ही सभी साधु-सन्त जीवन धारण करते हैं-

यथा मातारमाश्रित्य सर्वे जीवन्ति जन्तव:।
एवं गृहस्थमाश्रित्य सर्वे जीवन्ति भिक्षुका:।।

(वशिष्ठ-धर्मशास्त्र 8/16)

साधु-सन्तों के निर्दोष आहार-पानी निर्भीक विहारचर्या एवं निर्विघ्न ध्यानसाधना में सद्गृहस्थ श्रावक ही परम सहयोगी है इसीलिए इसे महाभारतकार व्यासमुनि ने सभी धर्मों का मूल बताया है-गृहस्थस्त्वेष धर्माणां सर्वेषां मूलमुच्यते। (शांतिपर्व 233/6)

पापभीरु, कृतज्ञ, दयालु, न्यायप्रिय, सुशील, गुणग्राही, बुद्धिमान् निर्मोही ऐसा उत्तम सद्गृहस्थ निष्ठावान् उपासक गृहस्थी में रहता हुआ जल में खिले हुए कमल के सदृश सदैव आत्मकल्याण में संलग्न रहता है।

जैनदर्शन में उपलब्ध विपुल श्रमणाचार की भाँति जैन मनीषी विद्वान् आचार्यों ने अपनी अनुपम रचनाओं में उक्त सद्गृहस्थ श्रावक के हितकारी एवं सदोपयोगी जीवनशैली पर भी विशद् एवं विस्तृत चिन्तन किया है जो उपासकाचार की अपेक्षा श्रावकाचार से अधिक लोकप्रिय है।

गुरुभक्ति से ओतप्रोत, अनुशासनप्रिय, विद्वज्जगत् की नवोदिता साध्वी स्मृति जी म० विलक्षण प्रतिभा की धनी है। सद्गृहस्थ श्रावक की गुण-गरिमा को दृष्टि में रखकर ही अपने आगम ग्रंथ-उपासकदशाङ्गसूत्र पर कार्य किया है। अत्यन्त प्रसन्नता है कि सम्प्रति यह प्रकाशित होकर समाज को समर्पित है।

जैन धार्मिक संस्कारों से सम्पन्न दार्शनिक सिद्धान्तों की ज्ञाता साध्वी श्री ने ग्रन्थारम्भ में भारतीय वाङ्मय में आगमसूत्रों का स्थान एवं महत्त्व तथा उनकी विषयवस्तु पर प्रकाश डालते हुए विस्तार से उपलब्ध श्रावकाचारों का परिचयात्मक परिवेक्षण किया है। यद्यपि आचारण से सम्बद्ध नियमों का मौलिक स्वरूप अपरिवर्तित रहा है फिर भी व्रतों का वर्गीकरण, परिभाषाओं एवं उनके परिपालन में देश कालानुसार विकासशीलता पायी जाती है जिसका प्राकृत ग्रंथ में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

कभी-कभी परम्परानुबन्ध के कारण यथार्थ विकासशीलता पर मानव की दृष्टि नहीं पहुँचती, जिससे तुलनाप्रधान समीक्षा तलस्पर्शी नहीं बन पाती किन्तु विवेकशील एवं सुलझे हुए विचारों वाली हैं- साध्वी स्मृति जी म० जिन्होंने अपनी इस कृति में जैनाचायो ने सद्गृहस्थोचित् जैसा सदाचार प्रज्ञप्त किया है विशेषकर श्रावक जीवन के नियमों का विधान करने वाले श्रावकाचारों का तुलना के साथ सम्पर्क समालोचन किया है। इसके साथ ही उपासक सद्गृहस्थ के सदाचरण के व्यावहारिक को भी यहाँ स्पष्ट किया गया है जो ग्रंथ के वैशिष्टय तथा साध्वी श्री के वैदुष्य को भी स्पष्ट दर्शाता है।

निच्छल हृदय एवं उदारमना साध्वी श्री हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, पालि-प्राकृत एवं पंजाबी की भी अधिकारी विदुषी हैं। इसी कारण स्वाध्याय परायणा आपश्री को लेखन के साथ ही साथ वक्तृत्वकला में भी नैपुण्य प्राप्त है।

राष्ट्र एवं समाज का गौरव तथा जैनों की आराध्या पूज्य उपप्रवर्तिनी, साध्वी शिरोमणि गुरुजी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की शिष्यानुशिष्या आपश्री, साध्वी रत्ना गुरुणी श्री सुधाजी महाराज की साक्षात् शिष्या हैं।

उपप्रवर्तिनी साध्वीरत्ना श्री राजकुमारी म० तथा आप सभी गुरुणिजनों का मुझे

आशीर्वाद प्राप्त है। मेरी मंगल भावना है कि राष्ट्र एवं समाज के हित में आप साध्वी श्री के द्वारा और भी अनुभवपूर्ण कतिपय रचनाओं का प्रकाशन होगा जिससे आप श्री गुरुणी एवं दादी गुरुणी का नाम और भी अधिक रोशन होगा। इसी मंगल भावना के साथ.....

ॐ शान्ति।

किरणविला
1756-बी/6 ज्योतिनगर
कुरुक्षेत्र- 136118
(हरियाणा)

डॉ० धर्मचन्द्र जैन
प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
संस्कृत एवं प्राच्यविद्या संस्थान
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
(हरियाणा)

प्राक्कथन

एम०ए० हिन्दी एवं संस्कृत करने के पश्चात् जिनशासन विभूति, शासन सूर्या, उपप्रवर्तिनी, साध्वी रत्ना गुरुणी श्रीस्वर्णकान्ता जी म० ने मुझे जैनदर्शन में पुस्तक लिखने की सत्प्रेरणा प्रदान की। मैंने उनके ही परामर्श पर जैन आगम ग्रन्थ उपासकदशाङ्गसूत्र को पुस्तक लेखन के लिये चुना, कारण यह कि उपासकदशाङ्गसूत्र सद्गृहस्थों के आचरण पर प्रकाश डालता है और जैनदर्शन में सद्गृहस्थ अथवा श्रावक का जैन साधक-साधना में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। सद्गृहस्थ ही संसार को असार समझकर वैराग्यभाव धारण कर श्रमण बनता है। इस दृष्टि से उपासकदशाङ्गसूत्र का सद्गृहस्थ श्रावक की दृष्टि से अधिक महत्त्व बढ़ जाता है।

जैन आगम एवं सिद्धान्त ग्रन्थों में उक्त सद्गृहस्थ के लिये, श्रावक, उपासक, देशव्रती एवं सागार, देशसंयमी, अगारी, अणुव्रती, इत्यादि नाम मिलते हैं। सम्यग्दर्शन आदि गुणों से युक्त जो प्राणी प्रतिदिन मुनियों, यतियों एवं साधु-सन्तों के आचार-विचारों को श्रवण करता है और अपने जीवन में आचारित करता है, वह श्रावक कहलाता है-

संमत्तदंसणाई पइदि यहं जइ जणा सुणेइ य।
सामायारिं परमं जो, खलु तं सावगं बिंति।।

(समणसुतं-श्रावकधर्मसूत्र, 301)

उपासक पद श्रावक के अर्थ को ही दर्शाता है, जो भारतीय वाङ्मय में बहुलतया प्रयुक्त मिलता है। 'उप' उपसर्ग पूर्वक 'आस्' धातु से ण्वुल् (अक्) प्रत्यय के जुड़ने पर उपासक शब्द बनता है (संस्कृत-हिन्दी कोश, पृ० 215) जिसका सामाय अर्थ समीप बैठने वाला होता है। अभिप्राय यह है कि उपासक वह है, जो अभीष्ट देव, गुरु एवं सन्त पुरुषों के समीप में बैठकर उनके द्वारा प्ररूपित सत्कर्म को एवं सद्विचारों को श्रवण करता है और अपने जीवन में उन्हें उतारता है।

जो सन्तों, मुनियों, सज्जनों और इष्टजनों की वैयावृत्य करता है, व्रत, उपवास एवं यम, नियम का भी यापन करता है और इस प्रकार धर्माराधन करता हुआ स्व-कल्याण में निरन्तर निमग्न रहता है, वह उपासक कहलाता है। जैन दर्शन में श्रावक और उपासक में मात्र यह शाब्दिक भेद है और अन्य नहीं।

उपलब्ध आगम ग्रन्थों में उपासना करने योग्य तीर्थङ्करों की वाणी को आगमों में गूंथा गया है। इन आगम ग्रन्थों (सूत्रों) की संख्या में न्यूनाधिकता मिलती हैं, फिर भी इनमें ग्यारह अंग सूत्रों को अधिक सम्मान दिया गया है। अंगसूत्रों में मुख्य रूप से श्रमण-श्रमणियों के आचार आदि का निरूपण मिलता है, जबकि 'उपासकदशाङ्गसूत्र' में एकमात्र गृहस्थधर्म पर प्रकाश डाला गया है, जिससे श्रमणोपासक के मूल आचार एवं अनुष्ठान का सम्यक् बोध होता है। श्रमण-श्रमणी के आचार अनुष्ठान की भांति श्रावक-श्राविका या उपासक-उपासिका के आचार अनुष्ठान का निरूपण भी परमावश्यक है, कारण कि ये चारों-श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका संघ (तीर्थ) के समान स्तम्भ हैं। वास्तव में श्रमण-श्रमणियों की विद्यमानता का आधार भी यथार्थरूप से श्रावक-श्राविकाएँ अथवा उपासक-उपासिकाएँ ही हैं। उपासक या श्रावकगण ही श्रमण बनते हैं। अत: श्रमण संस्था श्रावक या उपासकभित्ति पर आधारित है। श्रावक या उपासक धर्म की भित्ति जितनी अधिक सदाचार एवं न्याय नीति पर प्रतिष्ठित होगी श्रमण धर्म की नींव भी उतनी ही अधिक दृढ़ रहेगी। इसलिये श्रावक-श्राविकाओं व उपासक-उपासिकाओं के जीवन व्यवहार की व्यवस्था का प्रतिपादन किया जाना भी अनिवार्य है, जो 'उपासकदशाङ्गसूत्र' में निबद्ध है। उपासक धर्म के सदाचार एवं सद्विचारों की प्रतिष्ठा करना ही 'उपासकदशाङ्गसूत्र' का लक्ष्य है। यही उसका मूल विषय भी है।

'उपासकदशाङ्गसूत्र' का आगमों में सातवां स्थान है। स्थानांगसूत्र एवं समवायांगसूत्र के अनुसार इसमें दस अध्ययन हैं जिसमें दस उपासकों की कथाएँ वर्णित हैं। जैसे कि-वाणिज्यग्राम में आनन्द, चम्पा में कामदेव, वाराणसी में चुलनीपिता और सुरादेव, आलम्भिया में चुल्लशतक, काम्पिल्यपुर में कुण्डकौलिक, पोलासपुर में सद्दालपुत्र, राजगृह में महाशतक, श्रावस्ती में नन्दिनीपिता और सालिहीपिता। उक्त कथाओं के माध्यम से 'उपासकदशाङ्गसूत्र' में उपासकों के आचार-विचार के विषय में विशेषकर उनके द्वारा भोगों का त्याग, श्रावक दीक्षा, श्रावक अवस्था उसका कालप्रमाण, श्रुत ग्रहण, श्रावकव्रत, प्रतिमा, उपसर्ग, सल्लेखना, देवलोकगमन एवं पुनर्भव वर्णन के साथ ही साथ अन्त में मुक्तिलाभ आदि का वर्णन किया गया है।

इस उपजीव्य ग्रन्थ 'उपासकदशाङ्गसूत्र' में दस सद्गृहस्थों के जीवनयापन पर प्रकाश डालते हुए जैन दर्शन में उपासकों के लिये स्वीकृत उपासक धर्म पर विस्तृत चिन्तन किया गया है। अत: यह आगम कथा साहित्य का अनूठा उपादेय ग्रन्थ विशेष है।

प्रस्तुत अध्ययन निम्न पाँच अध्यायों में विभक्त कर इन्हीं समस्त विशेषताओं

के कारण मैंने प्राकृत आगम को अपने कार्य के लिये चुना और मैंने अपने कार्य का समीक्षात्मक अध्ययन उपासकदशाङ्गसूत्र है।

प्रथम अध्याय : जैनागमों में उपासकदशाङ्गसूत्र के अन्तर्गत आगम का अर्थ और उसके पर्यायवाची शब्द, आगमों का संगायन, आगम-भेद, आगमों का संक्षिप्त परिचय आदि विषय को प्रस्तुत करते हुए जैनागमों में 'उपासकदशाङ्गसूत्र' की महत्ता प्रतिपादित की गई है। इसके अतिरिक्त 'उपासकदशाङ्गसूत्र' का संक्षिप्त परिचय, सूत्र के रचयिता एवं उसका रचनाकाल, 'उपासकदशाङ्गसूत्र' की भाषा शैली, उस पर लिखित टीका-टीकानुटीकाएँ एवं 'उपासकदशाङ्गसूत्र' का उत्तरवर्ती साहित्य पर प्रभाव विषय का विवेचन किया गया है।

द्वितीय अध्याय : उपासकदशाङ्गसूत्र और उपासकाचार में रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चरित्र) की महत्ता का विवेचन करते हुए निर्वाण मार्ग का अनुसरण करने वाले श्रावक के 35 बोल (गुण) और उसे त्यागने योग्य सप्त कुव्यसनों पर प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अध्याय : उपासकदशाङ्गसूत्र में वर्णित उपासकाचार में श्रावकों द्वारा ग्रहण करने योग्य द्वादश व्रत (5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत, 4 शिक्षाव्रत) तथा व्रतों में उपस्थित देवता और मनुष्य संबंधी उपसर्ग, आचरणीय ग्यारह प्रतिमाएँ, षड् आवश्यक, तप एवं सल्लेखना आदि विषयों का विशद् विवेचन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय : उपासकदशाङ्गसूत्र और लोक का स्वरूप में जैन दृष्टि से लोक पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में ऊर्ध्वलोक (स्वर्ग), मध्यलोक एवं अधोलोक (नरक) की विस्तृत चर्चा है।

पंचम अध्याय : उपासकदशाङ्गसूत्र में प्रतिबिम्बित समाज और संस्कृति के अन्तर्गत वर्णाश्रम व्यवस्था, पारिवारिक जीवन, नारी का स्थान, शासन एवं न्याय व्यवस्था, व्यापार और अन्य कार्य, पूंजी, माप-तोल, खान-पान, रोग, वस्त्राभूषण, सौन्दर्य प्रसाधन एवं मनोरंजन के साधनों का वर्णन किया गया है। इसके अलावा इस अध्याय में उपासकदशाङ्गसूत्र में वर्णित नगरों एवं चैत्यों के भौगोलिक परिचय के साथ धार्मिक मत-मतान्तरों का विवेचन तथा तत्कालीन विशिष्ट व्यक्तियों का परिचयात्मक अध्ययन भी किया गया है। अन्त में पुस्तक का उपसंहरण के पश्चात् सहायक ग्रन्थों का विवरण दिया गया है।

अब यहाँ सर्वप्रथम, मैं जैन धर्म दिवाकर, आचार्य सम्राट श्री श्री 1008 पूज्य श्रीदेवेन्द्रमुनि जी म० के अनन्त उपकारों से उपकृत हूँ, जिनकी साक्षात् पावन कृपा दृष्टि सदैव मुझ पर है, उन्हीं की अन्तरंग प्रेरणा से मैं अपना यह पुस्तक लिखने में

सक्षम बन सकी हूँ। आप गुरुवर्य भगवन्त के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

श्रद्धेय गुरुवर्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्रीपद्मचन्द जी म० का मैं विशेषरूप से आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझ बालिका को जिनशासन में दीक्षित किया और जिनकी अनन्त अनुकम्पा से मैं सदैव अनुग्रहीत रही हूँ।

आगम ज्ञाता गुरुदेव श्री जितेन्द्र मुनि जी म० के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिनके कुशल निर्देशन में मुझे सर्वप्रथम 'उपासकदशाङ्गसूत्र' पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जिनशासन विभूति, शासनसूर्या, जिनशासन प्रभाविका, जैन ज्योति, उपप्रवर्तिनी, साध्वी रत्ना गुरुणी श्रीस्वर्णकान्ता जी म० के अनन्य अनुग्रह के प्रति मैं सदैव ऋणी हूँ और रहूंगी भी, जिनकी सतत् प्रेरणा ने ही मुझे पुस्तक-लेखन करने एवं विषय के चयन में मार्गदर्शन तथा प्रबल सम्बल प्रदान किया। आप पूज्य गुरुणी की दृष्ट एवं अदृष्ट प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ही मै, अपना यह गहन श्रमसाध्य कार्य पूर्ण कर सकी।

परम तेजस्विनी, परम विदुषी गुरुणी श्री सुधा जी म० की शुभकामना एवं प्रबल इच्छा मेरे पुस्तक को पूर्ण करने में प्रेरणा स्तम्भ रही है। हृदय की अनन्त आस्था से आप गुरुनीद्वय के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। इसके साथ ही समस्त साध्वी मण्डल का साधुवाद करना भी मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ, जिनका प्रत्यक्ष एवं परोक्ष योगदान इस ग्रन्थ की सम्पन्नता में यथासमय मुझे प्राप्त होता रहा है, मैं अत्यन्त आभारी हूँ साध्वी श्री चन्द्रप्रभा जी म०सा० का जिन्होंने समय-समय पर मुझे सहयोग प्रदान किया। आप सभी की मंगल भावना एवं अनन्य सहयोग से ही मैं यह गुरुतर कार्य कर पाई हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक डॉ० धर्मचन्द्र जैन, प्रोफेसर, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या संस्थान के कुशल निर्देशन में लिखा गया है। मैं उनके प्रति आभार प्रदर्शित करना अपना कर्त्तव्य समझती हूँ क्योंकि उन्हें ही पुस्तक लेखन को पूर्णता देने के लिये मार्गदर्शन का श्रेय प्राप्त है। उनकी सद्भावना सतत् सहयोग, अगाध विद्वत्ता ही मेरे पुस्तक को पूर्ण करने में सम्बल रही।

मैं अत्यन्त आभारी हूँ प्रो० श्री सत्यव्रत शास्त्री (पद्मश्री) जी की जिन्होंने मेरे ग्रन्थ के लिए दो शब्द लिखें।

मैं अत्यन्त आभारी हूँ डॉ० शिखर चन्द जैन जी का जिन्होंने मेरे ग्रन्थ के लिए प्रस्तावना लिखी है।

मैं आभारी हूँ इस ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु सुश्रावक श्री किशोर चन्द्र जैन व सुपुत्र सुभाष जैन, अजीत जैन एवं पौत्र दीपक जैन जी का जिन्होंने अल्प समय में पुस्तक का प्रकाशन किया।

मैं उन महापुरुषों एवं विद्वज्जनों के प्रति आभारी हूँ, जिनकी पुस्तकों से मुझे पुस्तक में सहायता प्राप्त हुई है और भी जिन ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों की सामग्री का मैंने ज्ञात व अज्ञात रूप से उपयोग किया है, उन सभी का हृदय से आभार मानती हूँ।

मैं बन्धु-युगल श्री रविन्द्र कुमार जैन, मालेरकोटला एवं श्री पुरुषोत्तम लाल जैन गोबिन्दगढ़ का भी हार्दिक धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने पूर्ण श्रद्धाभक्ति से मेरी पुस्तक को पूर्ण करने के लिये उपयोगी पुस्तकें उपलब्ध करवा कर मुझे सहयोग प्रदान किया। इसी सन्दर्भ में श्री मदन लाल जैन, कुरुक्षेत्र के योगदान को भी नहीं भुलाया जा सकता। अतः उनका हार्दिक साधुवाद करती हूँ।

साध्वी स्मृति

आशीर्वचन

भारतीय संस्कृति मुख्यत: दो धाराओं में विभक्त है-वैदिक संस्कृति और श्रमण संस्कृति। पुन: श्रमण संस्कृति की दो धाराएँ भी अजस्र गति से प्रवहमान है-श्रमण संस्कृति एवं श्रावक संस्कृति।

श्रमण संस्कृति में साध्वी परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। साध्वी परम्परा में पंजाब की साध्वी परम्परा की एक अलग पहचान है। पंजाब की साध्वी संयमनिष्ठा श्री ज्ञानां जी महाराज ने पंजाब की साधु परम्परा को जीवन्त किया था। उन्हीं की साध्वी परम्परा में पंजाब प्रवर्तिनी श्री पार्वती म० एवं पंजाब प्रवर्तिनी श्री राजमति जी म० हुए। आज अधिकांश उत्तरभारत का साध्वी समुदाय प्रवर्तिनी श्री पार्वती जी म० से सम्बन्ध रखता है। प्रवर्तिनी श्री पार्वती जी म० स्वयं एक विदुषी साध्वी थी। स्वर्गीय विद्वान् श्री अगर चन्द नाहटा के अनुसार वह हिन्दी की प्रथम जैन साध्वी लेखिका थी। वह षड्दर्शन की ज्ञाता थी। उन्होंने अपने जीवन में अनेकों विद्वानों से धर्म चर्चा कर जैनधर्म के प्रति प्रसारित भ्रान्तियों का निराकरण किया एवं स्त्री शिक्षा का प्रचार किया।

इसी परम्परा को अग्रसर किया-हमारी सद्गुरुजी, संथारा साधिका, जैन ज्योति, उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्ण कान्ता जी म० ने। एक तरफ सद्गुरुजी ने अपने सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र के प्रभाव से भूले-भटके मानवों को सत्पथ पर आरूढ़ किया, दूसरी तरफ सत्साहित्य की रचना के लिए प्रेरणा भी प्रदान की। उन्हीं की पावन प्रेरणा से बन्धुयुगल श्री रविन्द्र जैन, मालेरकोटला एवं श्री पुरुषोत्तम जैन मण्डी गोविन्दगढ़ ने प्राकृत जैनागमों एवं संस्कृत-हिन्दी साहित्य का पंजाबी में अनुवाद किया।

संथारा साधिका, जिनशासन प्रभाविका उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्ण कान्ता जी म० ने अनेक रत्न समाज को प्रदान किए, उन सर्वाधिक ज्योतिर्मय रत्नों में से एक हैं-परम विदूषी डॉ० साध्वी स्मृति। साध्वी स्मृति जी को गुरुणी जी म० ने अपने अनुभवी एवं सधे हुए हाथों से गढ़ा है, संवारा है, अपनी असीम कृपा का पात्र बनाया है। साध्वी स्मृति भी गुरुणी जी म० के प्रति पूर्णत: समर्पित रहे।

मेरी शिष्या डॉ० साध्वी स्मृति ने भरी जवानी में सांसारिक बन्धनों को तिलांजलि देकर संयम पथ अंगीकृत किया है। गुरुणी जी म० की हार्दिक उत्कण्ठा थी कि विदुषी वैरागन को शोध-कार्य करवाया जाए क्योंकि जब इसने अपना जीवन गुरु

चरणों में समर्पित किया था, तब इसने एम० ए० (हिन्दी) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की हुई थी। उपप्रवर्तिनी, संथारा साध्वी श्री स्वर्ण कान्ता जी म० ने अपनी अभिरुचि से साध्वी स्मृति का मानस तैयार किया और इसने एम०ए० (संस्कृत) की परीक्षा भी विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके उत्तीर्ण की। प्रारम्भ से ही यह कुशाग्र बुद्धि की धनी रही है। विनीतता इसका सर्वप्रिय गुण है। सरलता, सहजता को इसने अपने जीवन में संजोया हुआ।

श्रावक रत्न श्री पुरुषोत्तम जैन एवं श्री रविन्द्र जैन की प्रेरणा और उपप्रवर्तिनी, संथारा साधिका गुरुणी श्री स्वर्ण कान्ता जी म० की अन्तर्भावना एवं आशीर्वाद से श्रावकाचार के अन्तर्गत श्री उपासकदशाङ्गसूत्र पर कार्य प्रारम्भ किया क्योंकि जहाँ श्रमणों के लिए श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने अपने आगम-ग्रन्थों में श्रमणाचार का निर्देश दिया है, वही श्री उपासकदशाङ्गसूत्र के माध्यम से श्रावकाचार का भी उल्लेख किया है। गुरुणी जी म० की अभिलाषा थी कि श्रावकों के विषय में कुछ कार्य होना चाहिए। उन्हीं की भावना को शिरोधार्य करते हुए साध्वी स्मृति ने इसे अपने शोध का विषय बनाया। प्रारम्भ से ही यह अध्ययन शीला एवं परिश्रमशीला साध्वी रही है। यह शोधकार्य विद्वदरत्न डॉ० श्री धर्मचन्द जैन (संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) प्रोफेसर और निर्देशक (सेवानिवृत्त) के कुशल निर्देशन में लिखा गया है। इस ग्रन्थ में साध्वी स्मृति को स्वर्ण-परिवार की प्रत्येक साध्वी ने सहयोग प्रदान किया है। विद्वानों ने भी उदार हृदय से अपने पुस्तकालय की पुस्तकें प्रदान कर ग्रन्थ को सुलभ बनाने में योगदान प्रदान किया, इसलिए हम उनके प्रति धन्यवादी हैं।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन के सम्बन्ध में मैं इतना ही कहना चाहती हूँ कि यह ग्रन्थ साध्वी स्मृति द्वारा किए कठोर श्रम एवं अध्ययन का सुफल है। मैं अपनी शिष्या साध्वी स्मृति को आशीर्वाद देती हूँ और मन्तव्यमयी मंगलकामना करती हूँ कि वह भविष्य में भी जैन श्रुत-सेवा में इसी प्रकार जुटी रहे मैं अपनी सभी साध्वियों से अपेक्षा रखती हूँ कि वह साध्वी स्मृति से प्रेरणा लेकर आगम साहित्य पर अधिक से अधिक शोध कार्य सम्पन्न कर सके।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन के सन्दर्भ में मैं सुश्रावक श्री अजीत जैन जी को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान करती हूँ, जिन्होंने अल्प समय में इस पुस्तक का मुद्रण कराया।

मोती बाजर, जैन स्थानक
मालेरकोटला
2-12-2004

साध्वी सुधा
मालेरकोटला

प्रस्तावना

उपासकदशाङ्ग आज के युग में श्रावकों के लिए आचरनीय ग्रन्थ आज के वैज्ञानिक युग में जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सीमायें न के बराबर हैं तथा एक-एक क्षण के समाचार समस्त संसार में विदित होते रहते हैं तथा विभिन्न संस्कृतियों का मेल होने से उनमें अनेक परिवर्तन आ रहे हैं ऐसे समय में हमारा जैन साहित्य जो कि प्रथमानुयोग करुणा नियाग चरणानुयोग तथा द्रव्यानुयोग इन चार में विभक्त हैं तथा जिनमें समस्त द्वादशाङ्ग का सार आ जाता है हमारे लिये संसार में चलने का एक उत्तम मार्ग सही दिशा एवं प्रामाणिक दिग्दर्शन करते हैं। इसी दिशा में चरणानुयोग के अन्तर्गत उपासकदशाङ्ग एक ऐसी कृति है जो श्रावकों के लिये अमृतवाणी है सांसारिक होते हुये भी हम किस प्रकार मोक्षमार्ग पर अग्रसर होते हैं, किस प्रकार का जीवन-यापन करें, एवं राष्ट्र, समाज, परिवार व व्यवसाय में हमारे क्या कर्तव्य हैं ये सब विधि-विधान कर्तृत्व इस ग्रन्थ में प्राप्त होते हैं। गृहस्थ जीवन के लिये क्या आवश्यक है। ऋषि-मुनि, साधु-समाज के प्रति क्या दायित्व है उनकी वैय्यावृत्य करना सहयोग करना ये सब चर्चा यहाँ पर है और इससे अधिक श्रावकों के लिये क्या चाहिये? ये सब विषय इस महान ग्रन्थ में उपलब्ध हैं आज के सन्दर्भ में यह एक उपादेय ग्रन्थ है जिसको पढ़कर मनुष्य संसारी होते हुये आत्मकल्याण कर सकता है।

श्रावक इसका अपभ्रंश शब्द अनेक स्थानों पर सरावगी प्रचलित है। श्रावक का अर्थ है सुननेवाला शृणोति इति श्रावकः अर्थात् जो अपने गुरु से आत्मोद्धारपरक उपदेश को सुने। पंडित आशाधर ने श्रावक के विषय में सागारधर्मांकृत में कहा है-

अन्योन्यानुगुणं तदर्हगृहिणी
स्थानालयो ह्रीमयः।
युक्ताहारविहार आर्यसमिति
प्राज्ञः कृतज्ञोवशी
शृण्वन् धर्मनिधिं दयालुरधमीः
सागारधर्मामृतं चरेत्।।

न्यायपूर्वक धन कमाना गुरु का आदर करना उपासना करना, सत्यव्रती धर्म, अर्थ, काम इनका यथासम पालन करना, अपनी स्त्री लज्जावती सद्व्यवहारी हो,

सत्पुरुषों का मेल हो, धर्म की ओर प्रवृत्ति हो दयालु तथा श्रावकधर्म का आचरण करने वाला हो। इन गुणों से युक्त श्रावक आत्मकल्याण अवश्य कर सकता है।

धनोपार्जन के विषय में बहुत ही सूक्ष्मरीति से वर्णन है। गृहस्थ में रहकर धन की आवश्यकता तो है ही किन्तु किस प्रकार से इसको अर्जित किया जाये यह विचारणीय है। मनुष्य का समय अर्थोपार्जन के विषय में ही लगा रहता है किन्तु यह न्याय से कमाया जाना चाहिये। इसमें धोखाधड़ी, चोरी, बेईमानी तथा मिलावट नहीं होनी चाहिये। खाने की वस्तु में मिलावट करना, जो सामान दिखाया जाय वह नहीं देना ये सब बातें धर्म व्यापार विपरीत हैं देश रक्षा में तत्पर रहना चाहिये कभी भी देशद्रोह नहीं करना चाहिये न देशद्रोह के लिये प्रेरित करना चाहिये। वैद्य को अपना कर्त्तव्य मान करना रोगी का स्वास्थ्य देखना चाहिये तथा व्यापारी को लोककल्याण की भावना से व्यापार करना चाहिये अपने नौकरों के साथ सद्व्यवहार एवं नौकरों को अपने स्वामी का पूर्णरूप से लगनपूर्वक काम करना चाहिये।

जो व्यक्ति अपने से गुणवान् हैं रत्नत्रय को समझते हैं निष्ठावान् एवं धर्मपरायण हैं उनके प्रति श्रद्धा भक्ति विनय गुण रखना चाहिये इससे समाज में साम्यभाव एवं सौहार्द का वातावरण बना रहता है। जो धनोपार्जन किया गया है उसका सदुपयोग करना चाहिये। धनार्जन से अधिक उसका सदुपयोग करना भी श्रेयस्कर है। परिश्रमपूर्वक कमाया हुआ धन, धर्म, अर्थ, काम में परिवर्तित होकर मोक्ष की ओर प्रेरित करता है। प्रत्येक वर्ग का बराबर-बराबर पालन करना चाहिये।

मनुष्य को संसार में रहने के लिये सन्तति का होना भी एक सहायक कारण होता है अत: 'प्रजाये गृहमेधिनाम्' सन्तान के लिये विवाह करे एवं सन्तानोत्पत्ति के लिये, न कि काम सेवन करे। अधिक से अधिक ब्रह्मचर्य जीवन बिताये जिससे शरीर बलिष्ठ एवं सन्तान कुशाग्र बुद्धि हो।

मनुष्य का आहार-विहार एवं संगति सद्गुणिया होना चाहिये। 'संगति कथय किं न करोति पुंसाम्', उनकी संगति ही मनुष्य को उच्च योग्यस्थान में ले जाती है।

सन्तान की शिक्षा माता के ऊपर अधिक निर्भर करती है अत: माता सुशिक्षित विदुषी एवं सेवाभावी होनी चाहिये।

श्री मातुङ्गाचार्य ने भक्तामर स्तोत्र में कहा है,

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।

सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मि
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्।।

हे भगवान् सैकड़ों स्त्रियाँ, सैकड़ों पुत्रों को जन्म देती हैं किन्तु आप जैसे पुत्र को आपकी माता के सिवाय और कौन जन्म दे सकता है। सूर्य को सभी दिशायें धारण करती हैं किन्तु पूर्व दिशा ही सूर्य को धारण करती है।

पति-पत्नी को अच्छे गुणी पुत्र की कामना करनी चाहिये जिससे पुत्र अच्छे गुणों वाला हो।

उपासकदशाङ्गसूत्र में वर्णित आचार एवं व्यवहार आज के मानव जीवन के लिये अति उत्तम शिक्षा है। संसार में एड्स (AIDS) एच आइ वी (HIV) तथा प्रदूषण जनक बीमारियाँ फैल रही हैं। प्राकृतिक वातारण से मनुष्य दूर है एक बनावटी जीवन बिता रहा है। अगर इस उपासकदशाङ्गसूत्र के उपदेशों का पालन किया जाय तो संसार सुखी और शान्तिपूर्ण हो जायेगा। ब्रह्मचर्यपालन न करने से आज कुछ छोटे-छोटे विद्यार्थी भी अपने लक्ष्य से भ्रष्ट हो रहे हैं और आत्महत्या, हिंसा, इत्यादि का वातावरण बात-बात में होने लगा है।

जीव इस संसार में मोहवश अनेक योनियों में अनन्त समय से भटक रहा है ज्ञातावरण, दर्शनावरण वेदनीय मोहनीय आयुनाम गोत्र अन्तराय इन अष्टकर्मों ने इसकी आत्मा आच्छादित है घातिया कर्म उसको मोक्षमार्ग में बाधक हैं निर्जरा के द्वारा वह अपने कर्मों को नष्ट करता है किन्तु वह निर्जरा कैसे प्राप्त हो चूँकि श्रावक पाँच पापों में लिप्त है हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह। उपासकदशाङ्गसूत्र में इन पाँच पापों को श्रावक कैसे अपने वश में करें ये अणुव्रत किस प्रकार पालन करें जिससे वह रत्नत्रय की ओर अग्रसर हो।

मनुष्य को धीरे-धीरे उत्तम मार्ग पर अग्रसर करने के लिये ग्यारह प्रतिमाओं का वर्णन है दर्शन व्रत, सामायिक, पौषध नियम, ब्रह्मचर्य सचित्तत्याग आरम्भ त्याग, प्रेष्यारम्भ त्याग, उद्दिष्ट त्याग, श्रमणभूत प्रतिमा इत्यादि प्रथम प्रतिमा को धारण करने से ही मनुष्य संयम की ओर अग्रसर हो जाता है और उत्तरोत्तर आत्मा कलुष कर्मों से दूर होने लगती है। कायकार्श्यम् तप: तपस्या इन्द्रियनिग्रह, इच्छानिरोध, ये सब गुण प्रतिमाओं के पालन करने से स्वयं ही प्राप्त होने लगते हैं। शरीर और आत्मा अलग-अलग हैं। आत्मा का शरीर का कोई साथ नहीं है यह भावना जब श्रावक में आती है तो वह स्वयं ही आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होता है। वह त्याग की ओर अग्रसर होता है। ध्यान की पराकाष्ठा में लीन होता है गुणस्थानों का इसे स्मरण रहता है तथा उसकी श्रेणी अति उत्तम अवस्था में पहुँचने लगती है। इस प्रकार यह जीव

मनुष्य योनि को प्राप्त कर अपना अहोभाग्य समझता है तथा इस गति से वह मोक्षमार्ग के लिये अग्रसर होता है।

गृहस्थाश्रम जीवन-यापन रत्नत्रय प्राप्ति साधु समाज के प्रति दायित्व जिनवाणी की रक्षा इन सब विषयों के अतिरिक्त उपासकदशाङ्गसूत्र में प्रतिबिम्ब समाज एवं संस्कृति को पूर्णरूप से दर्शाया गया है। जिससे प्रतीत होता है कि समाज में सब प्रकार के व्यक्ति होते हैं जैसे आज हैं वैसे पहले भी थे समय-समय पर उपदेश गोष्ठियों का आयोजन होता था। स्त्रियों में भी कुटिलता और अन्य कुरीतियां थीं किन्तु अधिकतर साधु स्वाभाव एवं सद्गृहिणी थी। बहुपत्नी प्रथा थी जो कि कलह को उजागर करती थी। यह समाजिक दिग्दर्शन इस बात का द्योतक है कि सर्वदा आचार ग्रन्थों की परमावश्यकता होती है इनकी उपादेयता सर्वकालीन है।

उपासकदशाङ्गसूत्र का अध्ययन उत्तम रूप में किया गया है इसका अनुवाद इंग्लिश तथा अन्य भाषाओं में प्राप्त होने से लोगों का जीवन अवश्य ही परिवर्तित होगा चूँकि यह ग्रन्थ श्रावकों के लिये समर्पित है।

मैं अत्यन्त आभारी हूँ सुश्रावक श्री अजीत जैन जी का जिन्होंने मुझे इस कार्य (प्रस्तावना) को करने का उत्तरदायित्व सौंपा।

साध्वी डॉ० स्मृति जी ने उपासकदशाङ्गसूत्र शीर्षक के अन्तर्गत जो ग्रन्थ लिखा है जैन सिद्धान्तों के आधार पर लिखे गये प्रमाणिक ग्रन्थों की परिगणना में यह महत्त्वपूर्ण समझा जाएगा। साध्वीजी ने अहर्निश अनथक परिश्रम कर यह अनुपम कृति समाज को दी है।

साध्वी डॉ० स्मृति जी द्वारा रचित ग्रन्थ साहित्यिक नभोमण्डल में नक्षत्र की भांति दीप्तिमान हो यही मंगल कामना के साथ।

1-1-2005

डॉ० शिखर चन्द जैन
एम० ए० अंग्रेजी, संस्कृत
न्यायतीर्थ (जैन फिलोसफी, सिनीयर रीडर)
संस्कृत विभाग, शिवाजी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

विषय सूची

दो शब्द xi
शुभाशंसा xiii
प्राक्कथन xvii
आशीर्वचन xxiii
प्रस्तावना xxv
संकेत विवरण xxxv

प्रथम अध्याय : विषय प्रवेश : जैनागमों में उपासकदशाङ्गसूत्र 1-71

(क) भारतीय वाङ्मय में जैनागम

1. आगमपद एवं उसके पर्यायवाची शब्द : आगमन एवं आगम, आप्त वचन एवं आगम, ज्ञान एवं आगम, श्रुत एवं आगम, सूत्र एवं आगम, शास्त्र एवं आगम, शासन एवं आगम। 1
2. आगम संगायन : पाटलिपुत्र वाचना, उड़ीसा वाचना, माथुरी वाचना, वल्लभी वाचना-प्रथम, वल्लभी वाचना-द्वितीय वल्लभी वाचना। 5
3. आगम-भेद : अंग प्रविष्ट, अंग बाह्य, विषयानुसार आगमों का वर्गीकरण : चरणकरणानुयोग, धर्मकथानुयोग, द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, आगम विषयक दिगम्बर मान्यता। 7
4. आगम-एक परिचय : (क) एकादश अंगागम-आचाराङ्गसूत्र, सूत्रकृताङ्गसूत्र, स्थानाङ्गसूत्र, समवायाङ्गसूत्र, भगवतीसूत्र, ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र, उपासकदशाङ्गसूत्र, अन्तकृतदशाङ्गसूत्र, अनुतरोपपातिकसूत्र, विपाकसूत्र, प्रश्नव्याकरणसूत्र; (ख) द्वादश उपांग सूत्र : औपपातिकसूत्र, रायप्रश्नीसूत्र, जीवाभिगमसूत्र, प्रज्ञापनासूत्र, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, निरयावलिका (कप्पिया कप्पवंडसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिका, वण्हिदशा); (ग) चतुर्विध मूलसूत्र : दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नन्दीसूत्र, अनुयोगद्वार; (घ) चतुर्विध छेदसूत्र : व्यवहारसूत्र, दशश्रुत स्कन्ध, वृहत्कल्पसूत्र, निशीथ सूत्र; (ङ) आवश्यक सूत्र। 14

(ख) जैनागमों में उपासकदशाङ्गसूत्र 26

1. उपासकदशाङ्गसूत्र की विशेषताएं : सम्पन्नता : लौकिक और आध्यात्मिक, जैनधर्म सत्य की पक्षधर, विषय-वस्तु का साहित्यिक निरूपण, जैनधर्म व्यक्ति का धर्म, परिवार का नहीं, कथाओं में तर्क, श्रावकों का यथार्थ की तरफ झुकाव, मानवीय मनोव्यापार का चित्रण, समाज और संस्कृति विषयक सामग्री। 26

2. उपासकपद के समानान्तर शब्द : श्रमणोपासक, उपासक, अगार, श्रावक। 29

3. उपासकदशाङ्गसूत्र विषयगत परिचय : आनन्द, कामदेव, चुलनीपिता, सुरादेव, चुल्लशतक, कुण्डकोलिक, सकडाल, महाशतक, नंदिनीपिता, सालिहीपिता श्रावक 31

(ग) उपासकदशाङ्गसूत्र : रचयिता तथा रचनाकाल 42

(घ) उपासकदशाङ्गसूत्र की भाषा शैली 44

(ङ) उपासकदशाङ्गसूत्र की टीकानुटीकाएँ 49

(च) उपासकदशाङ्गसूत्र का उत्तरवर्ती साहित्य पर प्रभाव 51

1. श्वेताम्बर आम्नाय में मान्य रचनाएँ : तत्त्वार्थसूत्र, श्रावक धर्मबिन्दु प्रकरण, श्रावक धर्म समास अथवा श्रावक प्रज्ञप्ति, षट्स्थान प्रकरण, श्राद्धदिनकृत्य सूत्र, श्रावकधर्म विधि, श्राद्धगुणविवरण, श्राद्धविधि। 52

2. दिगम्बर आम्नाय में मान्य : चारित्तपाहुड़, रयनसार, रत्नकरण्डश्रावकाचार, स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा, रत्नमाला, पद्मचरित, वरागंचरित, हरिवंशपुराण, महापुराण, पुरुषार्थसिद्धयुपाय, उपासकाध्ययन, अमितगतिश्रावकाचार, चारित्रसारगत श्रावकाचार, वसुनन्दि श्रावकाचार, सावय धम्मदोहा, सागार धर्मामृत, धर्मसंग्रह श्रावकाचार, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार, गुणभूषण श्रावकाचार, धर्मोपदेश पीयूषवर्ष श्रावकाचार, लाटीसंहिता, उमास्वामि श्रावकाचार, पूज्यपाद श्रावकाचार, व्रतसार श्रावकाचार, व्रतोद्योत्तन श्रावकाचार, श्रावकाचार सारोद्धार, भव्यधर्मोपदेश उपासकाध्ययन, पंचविंशतिकागत श्रावकाचार, प्राकृत भावसंग्रहतगत श्रावकाचार, संस्कृत भाव संग्रहगत श्रावकाचार, पुरुषार्थानुशासन, कुन्दकुन्द श्रावकाचार। 56

द्वितीय अध्याय : उपासकदशाङ्गसूत्र और उपासकाचार 73-118

(क) रत्नत्रय : सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र। 73

(ख) मार्गानुसारी के 35 बोल : न्याय सम्पन्न विभव, शिष्टाचार प्रशंसक, समान कुल शील वाले भिन्नगोत्रीय के साथ विवाह सम्पन्न, पाप भीरू, प्रसिद्ध देशाचार का पालक, अवर्णवादी न होना, सद्गृहस्थ के रहने का स्थान, सदाचारी के साथ संगति, माता-पिता का पूजक, जो उपद्रव वाले स्थान को शीघ्र छोड़ देता है, निन्दनीय कर्म का त्यागी, आय के अनुसार व्यय करना, सम्पत्ति के अनुसार वेष धारण, बुद्धि के आठ गुणों का धनी, प्रतिदिन धर्म श्रवण कर्ता, अजीर्ण के समय भोजन छोड़ देना, समय पर पथ्य भोजन करना, परस्पर अबाधित रूप से त्रिवर्ग : धर्मार्थ, काम की साधना करना, अतिथि आदि का सत्कार, अभिनिवेश से दूर, गुण का पक्षपाती, निषिद्ध देश-काल चर्या का त्याग, बलाबल का ज्ञाता, व्रतस्थों और ज्ञानवृद्धों का पूजक, पोष्य का पोषण करना, दीर्घदर्शी, विशेषज्ञ, कृतज्ञ, लोकवल्लभ, सलज्ज, दयावान, सौम्यता, परोपकार करने में कर्मठ, षट् अन्तरंग शत्रुओं के त्याग में उद्यत, इन्द्रिय समूह को वश में करने में तत्पर। 82

(ग) व्यसन : द्यूत, मांसाहार, मद्यपान, वेश्यागमन, शिकार, चोरी, परस्त्रीगमन। 107

तृतीय अध्याय : उपासकदशाङ्गसूत्र में वर्णित उपासकाचार 119-249

(क) द्वादश व्रत : 119

1. अणुव्रत-अहिंसाणुव्रत अथवा स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत, सत्याणुव्रत अथवा स्थूल मृषावाद विरमण व्रत, स्थूल अदतादान विरमण व्रत, स्वदार सन्तोष परिमाण व्रत, इच्छा विधि परिमाण व्रत। 119

2. गुणव्रत-दिग्व्रत, उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत, अनर्थदण्ड विरमण व्रत। 142

3. शिक्षाव्रत-सामायिक व्रत, देशावकाशिक व्रत, पौषधोपवास व्रत, अतिथि संविभाग व्रत। 160

(ख) प्रतिमा : 177

दर्शन प्रतिमा, व्रत प्रतिमा, सामायिक प्रतिमा, पौषध प्रतिमा, नियम

प्रतिमा, ब्रह्मचर्य प्रतिमा, सचित्त त्याग प्रतिमा, आरम्भ त्याग प्रतिमा, प्रेष्यारम्भत्याग प्रतिमा, उद्दिष्ट भत्त त्याग प्रतिमा, श्रमणभूत प्रतिमा।

(ग) षडावश्यक : 196

1. आवश्यक पद की व्याख्या
2. आवश्यक के पर्यायवाची
3. आवश्यक के भेद–सामायिक, चतुर्विंशति स्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, प्रत्याख्यानं

(घ) तप : 211

1. तप का महत्त्व
2. तप की निरुक्तिपरक व्याख्या
3. तप के भेद–बाह्य तप : अनशन तप, ऊनोदरी तप, भिक्षाचरी तप, रस-परित्याग तप, काय क्लेश तप, प्रतिसंलीनता तप। आभ्यन्तर तप: प्रायश्चित तप, विनय तप, वैयावृत्य तप, स्वाध्याय तप, ध्यान तप, व्युत्सर्ग तप।

(ङ) सल्लेखना : 242

सल्लेखना की निरुक्ति व्याख्या, सल्लेखना : चतुर्थ शिक्षाव्रत, सल्लेखना कब करनी चाहिए, सल्लेखना कहाँ करनी चाहिए, सल्लेखना की विधि, सल्लेखना के भेद, सल्लेखना की अवधि, सल्लेखना के अतिचार।

चतुर्थ अध्याय : उपासकदशाङ्ग सूत्र में वर्णित लोक का स्वरूप 251-258

1. अधोलोक 251
2. मध्यलोक–जम्बूद्वीप, धातकी खण्ड, पुष्कर द्वीप 253
3. ऊर्ध्वलोक–भवनपति देव, वाणव्यन्तर देव, ज्योतिष देव, वैमानिक देव, कल्पोपग देव, कल्पातीत देव। 255

पंचम अध्याय : उपासकदशाङ्गसूत्र में प्रतिबिम्बित समाज एवं संस्कृति 259-286

(क) वर्णाश्रम व्यवस्था, (ख) पारिवारिक जीवन–संयुक्त परिवार प्रथा, पत्नी, पत्नी सम्मान, बहुपत्नी प्रथा, दहेज, सौतों के प्रति द्वेष,

ज्येष्ठ पुत्र का उत्तरदायित्व, पुत्र का माता–पिता से स्नेह, स्वजन-सम्बन्धी, (ग) नारी का स्थान, (घ) दास-प्रथा, (ङ) शासन व्यवस्था, (च) न्याय व्यवस्था–अपराधी, दण्ड व्यवस्था (छ, व्यापार एवं अन्य कार्य (ज) कृषि कर्म, (झ) पशु-पालन, (ञ) पूंजी–सिक्का, उधर (ट) माप-तोल, (ठ) खान-पान–शाक, सब्जियों का प्रयोग, मांस प्रयोग, मद्य प्रयोग, (ड) रोग एवं चिकित्सा पद्धति, (ढ) वस्त्र आभूषण, (ण) सौन्दर्य प्रसाधन एवं सुगन्धित द्रव्य, (त) मनोरंजन के साधन, (थ) भौगोलिक परिचय–चम्पा, वाणिज्य ग्राम, वाराणसी, आलम्भिया, काम्पिल्यपुर, पोलासपुर, राजगृह, श्रावस्ती उपनगर : कोल्लाक सन्निवेश, (द) चैत्य और उद्यान, (ध) पौषध शाला (न) उपासकदशाङ्गसूत्र में वर्णित अन्य धार्मिक मत, (प) विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय–भगवान महावीर स्वामी, गौतम स्वामी, आर्य सुधर्मा स्वामी, जम्बू स्वामी, राजा जित शत्रु, राजा श्रेणिक, गोशालक।

उपसंहार 287-288

सन्दर्भ ग्रंथ सूची 289-299

(क) उपासकदशाङ्गसूत्र : मूल 289

(ख) अन्य सहायक ग्रन्थ 289

संकेत विवरण

अंगुत्तर निकाय	अंगु०नि०
अथर्ववेद	अथ०
अभिधान चिन्तामणि कोष	अ०चि०को०
अभिनव प्राकृत व्याकरण	अभि०प्र०व्या०
अमितगति श्रावकाचार	अमित०श्राव०
अनतकृद्दशाङ्गसूत्र	अन्त०सू०
अनुयोगद्वारसूत्र	अनु०सू०
अनुतरौपपातिकदशाङ्गसूत्र	अनु०द०सू०
आउट लाईन ऑफ जैन फिलॉसफी	आ०ला० ऑफ जै०फि०
आगम और त्रिपिटक : एक अनुशीलन	आ०त्रि०, आ०औ०त्रि०
आगम युग का जैनदर्शन	आ०यु०जै०द०
आचारांगसूत्र	आ०सू०
आचारांगचूर्णि	आ०चू०
आवश्यकचूर्णि	आव०चू०
आवश्यक निर्युक्ति	आव०नि०
आवश्यकसूत्र	आव०सू०
उत्तराध्ययनसूत्र	उत्तरा०सू०
उपासकाध्ययन	उपासका०
उपासकदशाङ्गटीका	उपा० टीका
उपासकदशाङ्गसूत्र	उपा०सू०
उमास्वामि श्रावकाचार	उमा० श्रावका
उवासगदसाओ	उवा०सू०
औपपातिकसूत्र	औप०
ऋग्वेद संहिता	ऋग्०
कपसूत्र	कल्प सू०
कसायपाहुड	कसाय०

कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्ति०
कुवलयमाला का सांस्कृतिक अध्ययन	कुवलय०
कौटिल्य अर्थशास्त्र	कौटि०
गुणभूषण श्रावकाचार	गुण०श्राव०
गोम्मटसार	गोम्मट०
गोम्मटसार (जीवकाण्ड)	गो०जी०
गृहस्थधर्म (श्री जवाहर लाल जी म०)	गृहस्थ०
गृहस्थ धर्म (श्रमण श्रीफलचन्द जी म०)	गृह०
निर्ग्रन्थ प्रवचन	नि०प्र०
प्रवचन सार	प्र०सा०
मंगलवाणी	मंगल०
महापुराण	महा०
महाभारत	महाभा०
मनुस्मृति	मनु०
मूलाचार	मूला०
मूलाराधना	मूल०
योगशास्त्र	योग०
रत्करण्डक श्रावकाचार	रत्न०
राजप्रश्नीयसूत्र	राज०
लघुत्रिषष्ठिशलाकापुरुष चरित	लघु-त्रिषष्ठि०
लाटीसंहिता	लाटी०
वसुनन्दि श्रावकाचार	वसु०श्राव०
विपाकसूत्र	विपाक सू०
विविधतीर्थकल्प	विविध०
विशेषावश्यकभाष्य	विशेषा०
विसुद्धिमग्ग	वि०म०
बृहत्कल्पभाष्य	बृहत्०
व्याख्या प्रज्ञप्तिसूत्र	व्याख्या०
षटखण्डागम	षट्०
श्राद्धगुणविवरण	श्राद्ध०
श्रावक कर्त्तव्य	श्रा०क०

श्रावक धर्म	श्रा०ध०
श्रावक धर्मदर्शन	श्रा०ध०द०
श्रावक धर्म प्रदीप	श्रा०ध०प्र०
श्रावक प्रज्ञप्ति	श्रा०प्र०
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण	श्रीमद् बाल्मी०
श्रीमद्भागवद्गीता	श्रीमद् भाग०
समणसुत	समण०
समवायांग वृत्ति	समवा०
समवायांग सूत्र	सम०सू०
सावयधम्मदोहा	सावय०
समीचीन धर्मशास्त्र	समी०धर्म०
सम्यक्त्व कौमुदी	स०कौ०
सम्यक्त्व सप्तति	सम्य०स०
सर्वार्थसिद्धि	सर्वार्थ०
सागारधर्मामृत	सागार०
सुत्तनिपात	सुत्त०
सुधर्मश्रावकाचार	सुधर्म०
सूत्रकृतांगसूत्र	सूत्र०सू०
स्थानाङ्गसूत्र	स्था०सू०
स्थानाङ्गसूत्र (टीका)	स्था० टीका
स्याद्वाद मञ्जरी	स्याद्वाद०
त्रिषष्ठिशलाका महापुरुषचरित्र	त्रिषष्टि०
ज्ञाताधर्मकथासूत्र	ज्ञाता०सू०
ज्ञानार्णव	ज्ञाना०

प्रथम अध्याय

विषय प्रवेश : जैनागमों में उपासकदशाङ्गसूत्र

(क) भारतीय वाङ्मय में जैनागम

1. आगमपद एवं उसके पर्यायवाची शब्द
2. आगम संगायन
3. आगम-भेद
4. आगम-एक परिचय

(ख) जैनागमों में उपासकदशाङ्गसूत्र

1. उपासकदशाङ्गसूत्र की विशेषताएं
2. उपासकपद के समानान्तर शब्द
3. उपासकदशाङ्गसूत्र विषयगत परिचय

(ग) उपासकदशाङ्गसूत्र : रचयिता तथा रचनाकाल

(घ) उपासकदशाङ्गसूत्र की भाषा शैली

(ङ) उपासकदशाङ्गसूत्र की टीकानुटीकाएँ

(च) उपासकदशाङ्गसूत्र का उत्तरवर्ती साहित्य पर प्रभाव

1. श्वेताम्बर आम्नाय में मान्य रचनाएँ
2. दिगम्बर आम्नाय में मान्य